Available online at http://www.nrjp.co.in

Journal of Industrial Relationship, Corporate Governance &Management Explorer, (e ISSN 2456-9461)
Vol. 2, Issue, 02. 55-60p, August, 2018

National Research & Journal Publication

Review Article

भारत में सूती वस्त्र उद्योग का संक्षिप्त इतिहास

डॉ. सुशील कुमार श्रीवास्तव
वाणिजिय विभाग, हर सहाय जगदम्बा सहाय डिग्री कॉलेज, कानपुर उत्तर प्रदेश

Abstract

भारत का सूती वस्त्र उद्योग देष का सबसे प्राचीन एवं महत्वपूर्ण उद्योग हैं इस उद्योग का इतिहास भी अत्यन्त महत्वपूर्ण एवं देष के गौरव में वृद्धि करने वाला है । सिन्धु घाटी की सभ्यता जो विष्व की प्रमाणिक सभ्यताओं में एक है, में जो अवषेश, चित्र या प्रमाण मिले है उससे स्पश्ट है कि ईसा के 2000 वर्श और उसके पूर्व भी भारत वस्त्र उद्योग बहुत ही उन्नत अवस्था में था । देष में वर्तमान औद्योगिक क्रान्ति का सूत्रपात करने का श्रेय भी भारतीय सूत्री वस्त्र उद्योग को है । वर्तमान में भी देष का सूती वस्त्र उद्योग देष की अर्थव्यवस्था के निर्माण में अंग्रणी भूमिका निभा रहा है । यदि देष के कुल औद्योगिक उत्पादन एवं सूती वस्त्र उद्योग द्वारा उत्पादित माल के मूल्य के अध्ययन से यह स्पश्ट है कि कुल औद्योगिक उत्पादन का लगभग 15 प्रतिषत सूची वस्त्र उद्योग से मिलता है ।

Copyright©2018, डॉ. सुशील कुमार श्रीवास्तव *This is an open access article for the issue release and distributed under the NRJP Journals License, which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited.*

परिचय

भारत का सूती वस्त्र उद्योग देष का सबसे प्राचीन एवं महत्वपूर्ण उद्योग हैं इस उद्योग का इतिहास भी अत्यन्त महत्वपूर्ण एवं देष के गौरव में वृद्धि करने वाला है।सिन्धु घाटी की सभ्यता जो विष्व की प्रमाणिक सभ्यताओं में एक है, में जो अवषेश, चित्र या प्रमाण मिले है उससे स्पश्ट है कि ईसा के 2000 वर्श और उसके पूर्व भी भारत वस्त्र उद्योग बहुत ही उन्नत अवस्था में था । देष में वर्तमान औद्योगिक क्रान्ति का सूत्रपात करने का श्रेय भी भारतीय सूत्री वस्त्र उद्योग को है।वर्तमान में भी देष का सूती वस्त्र उद्योग देष की अर्थव्यवस्था के निर्माण में अंग्रणी भूमिका निभा रहा है ।

यदि देष के कुल औद्योगिक उत्पादन एवं सूती वस्त्र उद्योग द्वारा उत्पादित माल के मूल्य के अध्ययन से यह स्पश्ट है कि कुल औद्योगिक उत्पादन का लगभग 15 प्रतिषत सूची वस्त्र उद्योग से मिलता है । यहां तक देष के कुल निर्यात का प्रष्न है, निर्यात का 20 प्रतिषत भाग सूत्री वस्त्र उद्योग के रूप में है । सूती गोलमेल ''पाक्षिक'' पत्र के अनुसार सूती वस्त्र उद्योग ने वर्श 1989–90 में 5048 करोड़ रूपये का निर्यात किया । वर्तमान में सूत्री वस्त्र उद्योग अनेक समस्याओं से ग्रस्त है।

उद्योग की प्रमुख समस्या स्थापित उत्पादक क्षमता का समुचित उपयोग का न होना है जिसका कारण उद्योग का बृहताकार एवं संगठित एवं असंगठित क्षेत्र में फैला होना है । विष्व के कुल सूती वस्त्र निर्यात का 16 प्रतिषत भाग भारत में निर्मित होता है। इस समय मिल क्षेत्र में लगभग दो लाख लूम्स है जबकि हथकरघा क्षेत्र में कार्यरत् लूमों की संख्या

40 लाख है । लाखों की संख्या में ऐसे लूम्स भी कार्यरत है जो सूदूर ग्रामीण क्षेत्रों में लगे है जिनका पंजीयन सम्भव नहीं हो पाया है ।

विष्व में भारतीय सूती वस्त्र उद्योग का तीसरा स्थान है । भारतीय अर्थव्यवस्था में इसका बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान है । इस उद्योग में बहुत लोगों को रोजगार मिला हुआ है । इस उद्योग के विकास के साथ–साथ सम्बन्धित छोटे उद्योगों का भी अच्छा विकास हुआ है जिससे रोजगार के अवसरों में वृद्धि हो रही है । आज भारतीय सूत्री वस्त्र उद्योग में करीब 12 लाख लोगों को सीधा रोजगार प्राप्त है । इस उद्योग की 1014 मिले हैं तथा करीब 1200 करोड़ रूपये की पूॅजी विनियोजित है । जूट उद्योगों, जोकि सूती वस्त्र उद्योग का ही एक अंग है, में करीब 2.5 लाख व्यक्तियों को रोजगार प्राप्त है तथा करीब 300 करोड़ रूपये की पूॅजी लगी है।

भारत में सूती वस्त्र उद्योग के विकास का इतिहास

भारतीय सूती वस्त्र उद्योग हिन्दू तथा मुस्लिम साम्राज्य से ही बहुत प्रसिद्ध रहा है । लेकिन मुगल काल में यह उद्योग लघु एवं कुटीर उद्योग के रूप में था । संगठित उद्योग के रूप में भारत में सर्वप्रथम सूत्री वस्त्र मिल कलकत्ता के पास पुरारी नामक स्थान पर सन् 1818 में स्थापित की गयी थी लेकिन वह सफल न हो सकी । इसके बाद दूसरा कारखाना 1954 में बाम्बे में कानजी डाबर द्वारा स्थापित किया गया जिसने वास्तव में इस उद्योग की नींव रक्खी । इसके बाद भारत में सूती वस्त्र उद्योग का विकास षाहपुर, अहमदाबाद, कानपुर इत्यादि षहरों में हो गया । इस उद्योग की स्थापना के प्रारम्भिक दौर में सूती वस्त्र उद्योग को लंका षायर इंग्लैण्ड को मिलों से तीव्र प्रतियोगिता का सामना करना पड़ा क्योंकि तत्कालीन अंग्रेज षासक भारत को कच्चे माल के उत्पादक के रूप में देखना चाहते थे तथा भारत उनके देष की मिलों द्वारा उत्पादित माल के लिए उचित एवं लाभकारी उपभोक्ता केन्द्र था । भारतीय औद्योगिक विकास से उनकी योजना असफल होती थी । अतः उन्होंने भारतीय सूती वस्त्र उद्योग को पनपने न देने के लिए अनेक प्रयत्न किये ।

सूती वस्त्र निर्माण का इतिहास भारत के लिए बहुत अधिक पुराना है। इतिहासकारों का ऐसा कथन है कि जैसे–जैसे मानवीय सभ्यता का विकास हुआ वैसे वैसे मनुश्य को तन ढकने के लिए आवरण की आवष्यकता महसूस हुयी । प्रारम्भिक स्तर पर मनुश्य जानवरों की खालों, पेड़ों की बड़ी–बड़ी पत्तियों का प्रयोग तन ढकने के लिए किया करता था । इस सभ्यता के पष्चात् मनुश्य ने संगठित रूप में स्थानों में रहना आरम्भ किया और जानवरों की खालों तथा पेड़ों की पत्तियों के बजाय वस्त्रों को तन ढकने के लिए प्रयोग करना आरम्भ कर दिया । सिन्धु घाटी सभ्यता, जो विष्व में सबसे प्राचीनतम मानी जाती है उससे जो अवषेश प्राप्त हुये है उनके आधार पर यह जानकारी मिलती है कि ईसा से चार पांच हजार वर्श पूर्व भी लोग वस्त्र पहनते थे सम्राट अषोक, चन्द्रगुप्त, हर्श, जो कि ईसा के पूर्व के है इनके इतिहास के अध्ययन से भी वस्त्र उद्योग के विकास की जानकारी मिलती है । ईसा मसीह के जन्म के बाद 11वीं षताब्दी तक तथा मुगल बादषाहों के काल में भारत का वस्त्र उद्योग अपने विकास की चरम अवस्था पर था और भारत में निर्मित वस्त्रों की मांग विष्व के अनेकों देषों में भी ।इस युग में भारत का सूती वस्त्र उद्योग

कुटीर उद्योग के रूप में सारे संसार में फैला हुआ था ।

अंग्रेजों के षासन काल में भारत के सूती वस्त्र उद्योग को बहुत अधिक क्षति पहुंची क्योंकि अंग्रेजी सरकारों की नीति यह रही थी कि वह सूती वस्त्र का कच्चा माल इंग्लैंड में भेज देते थे तथा वहां से बना हुआ कपड़ा यहां पर बेचते थे इससे सबसे पहली हानि तो उन कृशकों को हुई, जोकि कपास की उत्पादन करते थे क्योंकि अंग्रेजी षासन काल में ये लोग कृशकों की जोत को (कपास) को बहुत ही सस्ते में खरीद लेते थे जिससे कि किसानों का उनकी उपज का उचित मूल्य नहीं मिल पाता था जिससे कि उनको अधिक आर्थिक हानि होती थी । दूसरी ओर यह सरकार इंग्लैंड से बना हुआ माल यहां पर बेचती थी जिससे कि हमारे यहां बेरोजगारी की समस्या उत्पन्न होने लगी क्योंकि यहां की मिलों और कुटीर उद्योगों को कच्चा माल न मिलने के कारण मिलों में पर्याप्त उत्पादन नहीं हो पाता था जिससे कि अधिकांष श्रमिक बेरोजगार हो जाते थे इस कारण भारत की अर्थव्यवस्था में बुरी तरह से इसका प्रभाव पड़ा तथा श्रमिक एवं किसानों दोनों ही भुखमरी के कगार पर पहुंच गये ।

सर्वप्रथम सन् 1861 में कानपुर के स्टेषन मास्टर मि0 वेस्ट ने भारतीय और अंग्रेज व्यापारियों की एक कमेटी बनाई और कानपुर में सूती मिलों में उद्योगों को बढ़ाने के लिए और उसके सुनहरे भविश्य के आपस में विचार विमर्ष किया और उसके लिए उन्होंने एक कमेटी बनाई जोकि कानपुर काटन कमेटी के नाम से बनी और एक सूती मिल लगाने की एक योजना तैयार की यह भी निर्णय लिया गया कि एक काटन मिल कानपुर में लगाई जाये । इन लोगों ने एक मिल भी कानपुर में स्थापित की जिसका नाम काटन मिल रखा । उस समय भारत के गर्वनर जनरल वायराय थे । मिल को स्थापित करने के लिए गंगा नदी के किनारे एक जमीन का हिस्सा खरीदा गया जिसके लिए श्री जी0एस0 जोन्स सचिव और प्रषासक बनाये गये जोकि फैक्ट्री के निर्माण के कार्य के लिए नियुक्त किये गये । ये मिल सूटरगंज बस्ती के पास बना हुआ है । सन् 1864 में यह मिल 100 लूम की सहायता से चलने लगा जिससे दस हजार चरखियां लगाई गई जिसका उस समय कुल बनाने का खर्चा 3 लाख रूपया आया इस प्रकार से कानपुर में सूती मिल की षुरूआत हुई, इस मिल को बहुत बड़ा घाटा हुआ और इसको सन् 1871 में नीलाम कर दिया गया । इसके बाद इसको मि0 मैक्सवेल ने खरीद लिया जोकि इसके पूर्व मिल के चैयरमैन थे । दुबारा इस मिल के मि0 जी0एस0 जोन्स प्रषासन नियुक्त किये गये और यह मिल दिन पर दिन प्रगति की ओर बढ़ने लगी । मुख्य रूप से इसका उत्पादन उम्दा किस्म का और मूल्य भी कम था जिससे किइस मिल के बने हुएकपड़े की मांग विदेषों में बहुत अधिक हो गई । 20वीं षताब्दी के षरू में मिल के प्रषासनिक ढांचे में परिवर्तन हुआ और1912 में यह मिल पब्लिक लिमिटेड कम्पनी के रूपमें परिणित कर दी गयी जिसका उस समय मूलधन 31 लाख 59 हजार रूप्या था । श्री जी0एस0 जोन्स ने एक और मिल सन् 1974 में स्थापित की इसकी षुरूआती लागत पांच लाख रूप्ये थी यह मिल नवीन मार्केट के दक्षिणमें सिविल लाइन्स में स्थित है । सन् 1874 में इस मिल के अन्दर 49 हजार 4 सौ पांच लूम्स और 1 हजार चरखिया और पांच हजार मजदूर मिल में काम करते थे । सन् 1880 में जून हारवुड जो कि एल्गिन मिल के पूर्व कर्मचारी थे

उन्होंनेएक छोटे स्तर पर सूत कातने और बनने कीमिल लगाई जोकि ग्राट ट्रक रोड और कालपी रोड के करीब कोपरगंज के निकट स्थापित की गई है । सन् 1882 में इस मिल का नाम कानपुर काटन मिल्स लि0 रखा गया जोकि षुरूआत में 10 लाख की लागत से लगाई गई, आजकल इस मिल का नाम ऐलगिन मिल्स 2 है । सन् 1886 में अर्थटन वेस्ट मिल की स्थापना की गई जिसको स्थापित करने में एलगिन मिल के भूतपूर्व कर्मचारी लाला षिव प्रसाद ने सहायता की । इसके बाद सक बिन्ता और कताई मिल लाल इमली के उत्तर पष्चिम में सूटरगंज के निकट स्थापित की इस मिल का नाम बाद में विक्टोरिया मिल पड़ा । षुरूआत में इस मिल की स्थापना में पांच लाख रूप्ये लगे इस मिल में सूत के धागे और कपड़े बनने लगे जिसकी खपत स्थानीय बाजार में होने लगी । अफगानिस्तान में गृह युद्ध के कारण सूती कपड़े की मांग बहुत ब़ गई इससे लंकाषायर के व्यापारी इस सूती कारखाने की उन्नति से बहुत डर गये कारण उनका व्यापार घाटे पर चलने लगा अंग्रेजी हुकुमत ने उनके व्यापार को संरक्षण देने के लिए वहां से जो काटन ' सूत ' भारत में आता था उसके ऊपर उसने आयात कर बहुत बड़ा दिया जिससे भारत में तैयार किये गये माल पर काफी बोझ पड़ गयाइससे कानपुर की सूती मिलों को काफी मुष्किलों का सामना करना पड़ा कारण उत्पादन मूल्य बहुत बढ़ गया ।

20 वीं षताब्दी के प्रारम्भ से ही कानपुर सूती मिल उद्योग में एक बड़ा परिवर्तन आया और फिर से यह उद्योग दिन पर दिन उन्नति की ओर अग्रसर हुआ । इस मिल की उन्नति का आंकड़े निम्न प्रकार है :

मिल का नाम	सीमित या निजी	अधिकृत पूँजी	भुगतान किया हुआ धन (लाख की संख्या में)
म्योरि मिल	लिमिटेड	30.20	20.80
कानपुर काटन मिल्स	लिमिटेड	22.2	22.00
विक्टोरिया मिल्स	लिमिटेड	1802	18.00

इसके बाद इस नगर का सूती वस्- उद्योग बहुत तेजी से बढ़ने लगा सन् 1914 से 1917 तक 200000 तकुओं का उत्पादन किया गया जोकि फौज के काम आया चादरे, तौलिया, काफी तादाद में बनाई गई, इस तैयार किये गये सूती कपड़े का वनज जोकि रेल द्वारा भेजागया 6 लाख मन था । सन् 1915 में यह 1 लाख पचास हजार मन और अधिक हो गया इससे यह सिद्ध होता है कि मितनी जल्दी इसका विकास हुआ । प्रथम विष्वयुद्ध में सूती वस्- उद्योग को बहुत कठिनाइयों का भी सामना करना पड़ा क्योंकि जापान सूती कपड़े के उत्पादन के क्षेत्र में बहुत नजदीकी प्रतिद्वन्दिता में आ गया इसके अतिरिक्त चीन भी विकास के पथ पर एक षक्तिषाली प्रतिद्वन्दी के रूप में उभरा इसका असर कानपुर के सूती उद्योग के उत्पादन पर बहुत जबरदस्त पड़ा और उत्पादन घटने लगा, और इसके हथकरघा उद्योग को बहुत बड़ा धक्का लगा ।

औद्योगिक क्रान्ति के पष्चात्

जब किसी देष की आर्थिक, सामाजिक तथा राजनीतिक स्थितियों में बड़े पैमाने पर एक साथ परिवर्तन होते हैं तो उसे हम ' क्रान्ति ' की संज्ञा देते हैं । इसी

प्रकार जब किसी देष के औद्योगिक क्षेत्र में पूर्णरूपेण परिवर्तन होते है तो उसे हम ' औद्योगिक क्रान्ति ' कहते हैं ।
औद्योगिक क्रान्ति का श्री गणेष इंग्लैंड की धन लोलुपता एवं साम्राज्य प्राप्ति की तीव्र इच्छा ने उसेएक ऐसे राज्य का स्वामी बना दिया यहां कभी भी सूर्य अस्त नहीं होता था । उसके पास पर्याप्त मात्रा में यातायात क ेसाधन तथा व्यापारिक योग्यता थी, जिससे वह बड़े कौषल के साथ विदेषों के साथ व्यापार करता था । इंग्लैंड में 17 वीं षताब्दी में बड़ी तीव्र गति से आर्थिक क्षेत्र में परिवर्तन हुए । व्यापार का क्षेत्र बढ़ा, नये–नये कद्योगों की स्थापना की गई, जिसने देषका सम्पूर्ण आर्थिक कलेवर ही बदल दिया । इस परिवर्तन को ही औद्योगिक क्रान्ति कानाम दिया गया ।
इंग्लैंड में औद्योगिक क्रान्ति हो जाने से इससे आर्थिक परिवर्तन हुए, तथा भारत के सूती उद्योग में भी परिवर्तन हुए उस परिवर्तन के निम्नलिखित आर्थिक व सामाजिक प्रभाव पड़े।

औद्योगिक क्रान्ति का प्रमुख प्रभाव यह रहा कि सूती वस्त्र उद्योग के जो कारीगर अपने घरों में अपने ही लोगों के सहयोग से वस्तुओं का उत्पादन करते थे वह अब मषीनों और यन्त्रों का प्रयोग करने लगे थे। लघु व कुटीर उद्योग घरों से निकल कर कारखानों तक आ गये ।

क्रान्ति के फलस्वरू प व्यापार का विकास काफी तीव्र गति से होने लगा । इकाकी व्यापार साझेदारी में बदलने लगे तथा साझेदारी संस्थायें संयुक्त स्कन्ध प्रमण्डल का स्थान लेने लगी ।

व्यापार के बदलते हुए इस स्वरू प के परिणाम स्वरू प जो व्यापारिक संस्थाए स्थानीय व्यापार करती थी, वे सम्पूर्ण राश्ट्र में कार्य करने लगी तथा जिनका व्यापार क्षेत्र राश्ट्रीय था उनका अन्तर्राश्ट्रीय क्षेत्र होने लगा । भारत के सूची वस्त्र भी इस प्रतिस्पर्धा में आगे बढ़ने लगे तथा अपना माल भी विदेषभेजने लगे लेकिन भारतीय सूती वस्त्र विदेषों की तुलना में महंगा था क्योंकि इनकी उत्पादन लागत अधिक आती थी जिससे कि कपड़ों (वस्त्र) के दाममें वृद्धि होती थी इसके लिए हमें भी अपने यहां सूती वस्त्रों की किस्म में सुधार के लिए स्वचारित मषीने, मजदूरों को प्रषिक्षण आदि की भी व्यवस्था करनी पड़ी जिससे कि हमारा माल विदेषी बाजार में अपना स्थान बना सके । बड़े कारखानों का विकास तथा तेल औद्योगिक विकास ने बड़े पैमाने परउत्पादन को सम्भव बना दिया । परिणामस्वरूप उत्पादन की मात्रा काफी बढ़ गयी ।

बड़े पैमाने पर उत्पादन तथा लाभप्रद औद्योगिक विकास ने औद्योगिक स्थानीयकरण को प्रोत्साहन दिया । उत्पादन के साधन कुछ विषेश स्थानों पर उपलब्ध होने लगे जिससे उद्योगों की स्थापना भी उन्हीं स्थानों पर अधिक होने लगी । कारखानों की संख्या एवं कार्यो की प्रकृति में वृद्धि होने के कारण रोजगारों के अवसरों में वृद्धि हुई है । अब एक कर्मचारी द्वारा अनेक कार्य न किये जा कर एक ही कार्य किया जाने लगा । कार्यो का कर्मचारियों में उनकी योग्यतानुसार कार्य का बंटवारा किया जाने लगा ।

औद्योगिक स्थानीकरण एवं विषिश्टीकरण के कारण उद्योग एक ही स्थान पर केन्द्रित होने लगे । इससे एक ही स्थान पर कर्मचारियों की संख्या बढ़ने लगी और औद्योगिक नगरों के विकास को प्रोत्साहन मिला । नगरों की जनसंख्या बढ़ने लगी

। घनी और गन्दी श्रमिक बस्तियों की स्थापना हुई जिसका श्रमिकों के स्वास्थ्य एवं रहन सहन के स्तर पर बुरा प्रभाव पड़ा ।

मषीन युग के प्रारम्भ के कारण कारखानों में श्रमिकों का महत्व कम होने लगा । पूॅजीपति मषीनों को अधिक महत्व देने लगे, बिना रूके अधिक समय तक और अधिक कार्य कर सकती थी । इससे श्रम, समय एवं धन सभी की बचत होती थी ।

पूॅजीपतियों द्वारा श्रमिकों को कम महत्व देने तथा उनकी समस्याओं पर कम ध्यान दिये जाने के कारण श्रम संघर्श का उदय हुआ । उद्योगों में स्थानान्तरण, घटनी ।

संदर्भ

1. महाजन अश्विनी एवं दत्त गौरव, 2011, "भारतीय अर्थव्यवस्था", एस.चन्द्र एण्ड कम्पनी लिमिटेड, पृष्ठ सं0–719
2. वकिपिडिया एक मुक्त ज्ञान कोष

हड़ताल तालाबन्दी, घेराव आदि समस्याओं ने जन्म लिया जिससे श्रम व पूॅजी के मध्य कटु सम्बन्धों की नींव पड़ी ।

पूॅजीपतियों द्वारा श्रमिकों को कम महत्व देने तथा उनकी समस्याओं पर कम ध्यान दिये जाने के कारण श्रम संघर्श का उदय हुआ । उद्योगों में स्थानान्तरण छटनी हड़ताल तालाबन्दी घेराव आदि समस्याओं ने जन्म लिया जिससे श्रम व पूॅजी के मध्य कटु सम्बन्धों की नींव पड़ी ।

औद्योगिक क्रान्ति के फलस्वरूप समाज कई वर्गो में विभाजित हो गया। समाज में मुख्य रूप से तीन वर्ग उत्पन्न हो गये

3. महाजन अश्विनी एवं दत्त गौरव, 2011, "भारतीय अर्थव्यवस्था", एस.चन्द्र एण्ड कम्पनी लिमिटेड, पृष्ठ सं0–705
4. दत्त एवं सुन्दरम, 2011, "भारतीय अर्थव्यवस्था", पृष्ठ सं0–719
5. पूर्वोक्त